UPHIN 47963

कानपुर

प्रगति प्रभात

शुक्रवार, 02 दिसंबर 2022

दोपहर को यह स्कूटी लेकर ड्यूटी जा रही है।

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक:डॉ अरूण

कानपुर 7 सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूक्ष्म पोषक तत्व 40 :50:50 :10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बढ़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है। इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों को रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चैंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।

महापौर ने तीन दिन अनवरत सफाई अभियान का किया शुभारंभ

कानपुर। मुख्यमंत्री के निर्देश पर कानपुर शहर में 3 दिन का अनवरत सफाई अभियान का शुभारंभ महापौर द्वारा कोपरगंज चौराहे पर हुआ सफाई अभियान के दौरान शहर के 258 खुले कूड़ाघरों को हटाकर उस जगह का सुंदरीकरण कराकर बनाया जाएगा सेल्फी प्वाइंट महापौर प्रमिला पांडे ने समस्त शहरवासियों से अपील की है कि सफाई के इस महाअभियान में आप सभी लोग हमारा साथ दे ।

पपीते को पकाने के लिए केमिकल का उपयोग न करें सेहत के लिए हानिकारक

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन

डीटीएनएन चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40 -50- 50 -10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बड़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है। इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।

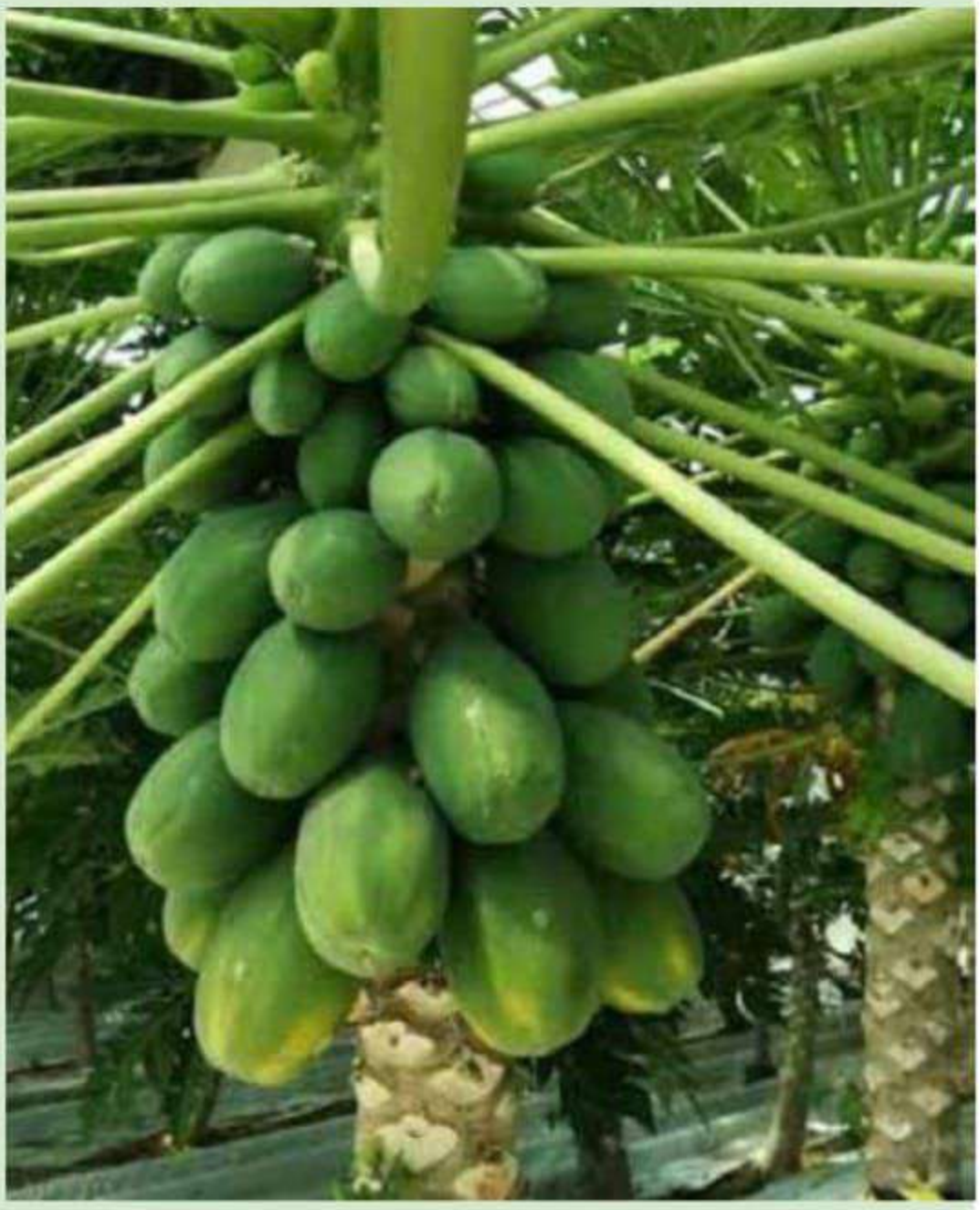

पुर

दि ग्राम टुडे

देहरादून, शुक्रवार, 2 दिसम्बर 2022

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन पर दिए गए टिप्स

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40 -50- 50 -10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बड़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है।यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है। इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का

विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है।तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

भारत ने जी20 की अध्यक्षता की पारी शुरू की 12

तमिल पर्यटकों की यात्रा से उग्र देश के मानचित्र पर... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 52
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
शुक्रवार | 02 दिसंबर, 2022

पपीते की खेती के बारे में किसानों को किया जागरूक

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर।

सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ.अरुण कुमार सिंह ने पपीते की फसल का प्रबंधन विषय पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। उद्यान वैज्ञानिक डॉ. सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाकर रखें। पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप हो सकता है, जिससे बचाव के लिए कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि फलों के पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है। पपीते पकाने को रसायनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सर्दी ऋतु में पपीते की फसल का प्रबंधन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि पपीते की फसल का प्रबंधन नितांत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पपीते के पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त के महीने में संपन्न हो जाती है। किसान भाइयों को ऐसी फसल की समसामयिक देखभाल करना आवश्यक है। यदि पौधों पर मिट्टी न चढ़ाई गई हो तो तत्काल शेष पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सूचम पोषक तत्व 40-50-50-10 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके दे दें। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर सिंह ने बताया कि आने वाले सर्दियों के मौसम में पपीते के खेत में पर्याप्त नमी बनाए रखें क्योंकि पौधों की बड़वार काफी होती है साथ ही पौधों पर लगे हुए फलों की तेजी से वृद्धि भी होती है। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में वैसे तो बीमारियां पौध गलन कम प्रभाव होता है किंतु आवश्यकता से अधिक पानी लग जाने से पपीते के पौधों की जड़ों पर गलने की बीमारी का प्रकोप तेजी से होता है यदि रोकथाम न की जाए तो यह बीमारी सिंचाई के पानी के साथ और ज्यादा विकराल रूप धारण कर लेती है।

इस गलन की बीमारी से बचाव हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड दवा 25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर तने के आसपास अच्छी तरीके से तर कर देना चाहिए। यदि बीमारी दोबारा आए तो इसी दवा को फिर से प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि पपीते की खेती में ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रयोग करने से पानी की काफी बचत होती है। साथ ही फलों का विकास भी अच्छी तरह से होता है उन्होंने यह भी बताया कि पपीते की फसल को ठंडक से बचाव हेतु उत्तर पश्चिम दिशा की ओर बाड़ लगाने का कार्य पूर्ण कर लेना चाहिए जिससे पौधों पर विपरीत मौसम का प्रभाव न पड़े। उन्होंने ने कहा कि फलों की पूर्ण विकास के लगभग 50 से 60 दिनों बाद इनके पकने की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगती है दूर के बाजार में फसल बेचने के लिए फलों की रंग की अवस्था पर ही तोड़ लेना चाहिए तथा अच्छी तरह से अखबार या पुआल से लपेट कर भेजना चाहिए। डॉक्टर सिंह ने बताया कि पपीते के फलों को हानिकारक रसायनों से पकाने की प्रथा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी कि पपीते के फलों को आधुनिक तकनीक से बनाए गए रैपनिंग चेंबर का प्रयोग करने से फलों की गुणवत्ता अच्छी रहती है तथा बाजार में मूल्य भी अच्छा मिलता है।